Seventeenth Loksabha

tle: Regarding completion of North Koel Irrigation Project.

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिए अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आज मैं लोक महत्व के एक अति महत्वपूर्ण विषय को उठाने जा रहा हूं, इसलिए बात पूरी होने तक आपका संरक्षण चाहूंगा।

महोदय, बिहार और झारखण्ड की एक अंतरराज्यीय सिंचाई परियोजना है, जिसका नाम उत्तर कोएल सिंचाई परियोजना है। यह परियोजना वर्ष 1975 में स्वीकृत हुई और कार्य आरम्भ हुआ। इसकी प्रारम्भिक लागत मात्र 30 करोड़ रुपये थे, उससे बढ़कर यह लागत 80 करोड़ रुपये हुई। आज 45 वर्ष बीत गए, लेकिन यह परियोजना अभी भी अधूरी है। अभी तक इस पर 1,000 करोड़ रुपये से भी अधिक धन खर्च हो चुका है। मुझे यह बताते हुए दुख हो रहा है कि 45 वर्ष बीत जाने के बाद भी यह परियोजना अधूरी है। हालांकि पूर्व की सरकारों ने इसे एक तरह से दफन ही कर दिया था, लेकिन जब माननीय प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी इस देश के प्रधानमंत्री बने, तब वर्ष 2014 के बाद इस परियोजना को पुनर्जीवित किया।

इसका दूसरा जन्म हुआ। उन्होंने सारी बाधाओं को दूर करते हुए केन्द्रीय मंत्रिपरिषद से 1722 करोड़ रुपये से अधिक की स्वीकृति दी। उसके बाद 5 जनवरी, 2019 को आदरणीय प्रधान मंत्री जी के करकमलों से इसका शिलान्यास हुआ। परियोजना को पूरा करने के लिए 30 महीने की समयावधि, यानी ढाई साल की थी, लेकिन इस बीच कोरोना आ गया। … (व्यवधान) मैं आधी मिनट में अपनी बात पूरी करता हूं। इस नहर की जो कंक्रीट लाइनिंग करनी थी, उसमें बिहार सरकार ने अनावश्यक देर की। इसमें लगभग दो वर्ष बीते गए, जो बेकार गए।

अब वह भी स्वीकृति मिल गई है और सहमति भी मिल गई है। अभी तक यह स्थिति है कि इसके डैम में, जिसको कुटकू डैम या मण्डल डैम कहते हैं, फाटक नहीं लगा है। लाइनिंग का जो काम चल रहा है, वह काफी धीमी गति से चल रहा है।

मेरा आपके माध्यम से भारत सरकार और केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय से यह अनुरोध होगा कि कम से कम समयावधि, यानी जितनी जल्दी हो सके और जितना शीघ्र हो सके, कुटकू डैम में फाटक लगाने का काम और साथ-साथ लाइनिंग के काम को पूरा कराया जाए। धन्यवाद।

माननीय सभापति : डॉ. बीसेट्टी वेंकट सत्यवती – उपस्थित नहीं।

श्री कोडिकुन्नील सुरेश।